Import of Oil

1038. SHRI RAGAVALU MOHANARANGAM: Will the Minister of PETROLEUM AND CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state:

(a) the quantity of crude oil imported and the countries from which imported; during last one year; and

(b) the nature of the concessions secured or likely to be secured for import of oil from Iran?

THE MINISTER OF PETROLEUM AND CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI H. N. BAHUGUNA): (a) The required information for the year 1977 is given below:—

Name of country	Quantity imported in Million Tonnes
Iran	6·7
Iraq	2·9
UAE	0·9
USSR	1·0
Saudi Arabia . . .	2·9
Egypt	0·3
	14·7

(b) An offer to make available additional crude oil supplies annually at OPEC price on credit terms or lump-sum payment as suitable, was made in order to participate in or finance approved projects such as the Alumina Project for the Eastern Coast deposits of bauxite, Paper and Pulp Factory for Tripura and the Second Stage of Rajasthan Canal. The rupee equivalent of these instalments or the lump-sum as the case may be, would be funded in India as required, whether for investment or expenditure or could be used to finance the approved projects.

हिन्दी टाइपिस्टों तथा स्टेनोग्राफरों का उपयोग किया जाना

1039. **श्री नवाब सिंह चौहान :** क्या विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय मंत्रालय/विभाग में हिन्दी टाइपिंग में कुल कितने टाइपिस्टों को प्रशिक्षण दिया गया है और हिन्दी स्टेनोग्राफी में कितने स्टेनोग्राफरों को प्रशिक्षण दिया गया है;

(ख) इन टाइपिस्टों तथा स्टेनोग्राफरों में से कितने टाइपिस्टों तथा स्टेनोग्राफरों की सेवायें पूरी तरह से हिन्दी में कार्य के लिए उपयोग में ली जाती है;

(ग) इन हिन्दी टाइपिस्टों तथा स्टेनोग्राफरों की सेवायें उपयोग में न लाए जाने के क्या कारण हैं; और

(घ) क्या इनकी सेवाओं का उपयोग करने के लिए कोई योजना बनाई गई है और यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा क्या है ?

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री नर सिंह यादव) : (क) तिरासी टंकक और चौंसठ आशुलिपिक, क्रमश: हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षित किए गए हैं।

(ख) हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि कार्य के लिए इक्यावन टंककों और अट्ठाईस आशुलिपिकों का उपयोग किया जा रहा है।

(ग) मंत्रालय में कार्य का स्वरूप ऐसा है कि हिन्दी टंकण और आशुलिपि में प्रशिक्षित सभी टंककों और आशुलिपिकों की सेवाओं का उपयोग करने की पर्याप्त गुंजाइश नहीं है।